प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की आरम्भिक कड़ी व आधारशिला

सुभाष चन्द्र चौहान

प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की आरम्भिक कड़ी व आधारशिला है जो बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। औपचारिक शिक्षा का आधारभूत स्तम्भ होने के कारण इसे प्राथमिक शिक्षा, बेसिक शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, आधारभूत शिक्षा आदि सभी पर्यायवाची शब्द हैं। इन सभी का मुख्यतः एक अर्थ है यद्यपि समय–समय पर लेखकों, समितियों, आयोगों ने विभिन्न शब्दावलियों का प्रयोग किया है। बालकों को 6 वर्ष से 14 वर्ष तक दी जाने वाली शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है जो कक्षा एक से कक्षा 8 तक चलती है। राममूर्ति समीक्षा समिति (1990) के अनुसार प्राथमिक शिक्षा दो भागों में विभक्त की गयी है, 1. प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक) एवं 2. उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)। किसी भी देश की प्रगति में उस देश की शिक्षा–व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पूरी शिक्षा–व्यवस्था का मूल प्राथमिक शिक्षा में निहित होता है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर को शिक्षा के पिरामिड की नींव माना जाता है तथा इसका प्रभाव शिक्षा के सभी स्तरों पर परिलक्षित होता है। प्राथमिक शिक्षा जीवन की बुनियाद है। यह वह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई व्यक्ति समाज या राष्ट्र उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है।